(ब) मध्य-सीमा सिद्धान्त
(Middle-Range Theory)

यदि वृहत् एवं सूक्ष्म दृष्टिकोणों में से किसी को भी न अपना कर दोनों के समन्वित दृष्टिकोण द्वारा अध्ययन किया जाता है, तो इस प्रकार के अध्ययन के आधार पर निर्मित सिद्धान्त मध्य-सीमा सिद्धान्त कहे जाते हैं। इस प्रकार, मध्य-सीमा सिद्धान्त वृहत् एवं सूक्ष्म अध्ययनों के बीच की श्रेणी पर आधारित होते हैं। इस प्रकार के सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने का श्रेय **रोबर्ट के० मर्टन** (Robert K. Merton) को दिया जाता है। **एम० फ्रान्सिस अब्राहम** (M. Francis Abraham) ने इन्हें **लघु सिद्धान्त** *(Miniature theories)* कहा है। इस प्रकार के सिद्धान्त अधिक विशिष्ट होते हैं तथा इनकी सन्दर्भ संरचना काफी सीमित होती है।

मर्टन के शब्दों में, "मध्य-सीमा सिद्धान्त वे सिद्धान्त हैं जोकि एक ओर दिन-प्रतिदिन के अनुसन्धान में प्रचुर मात्रा में प्रकट होने वाली लघु परन्तु कार्यवाहक उपकल्पनाओं एवं दूसरी ओर सामाजिक व्यवहार, सामाजिक संगठन व सामाजिक परिवर्तन में समस्त अवलोकित समानताओं की व्याख्या करने वाले एक समन्वित सिद्धान्त को विकसित करने हेतु व्यवस्थित प्रयासों के बीच में स्थित होते हैं।"[1]

मर्टन के विचारों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्य-सीमा के सिद्धान्त न तो वृहत् पैमाने पर हुए अध्ययनों पर आधारित होते हैं और न ही सूक्ष्म या लघु पैमाने पर हुए अध्ययन इनका आधार होते हैं। वे इन दोनों के बीच की श्रेणी हैं। इन्हें पृष्ठ 20 पर वर्णित चित्र—2 द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

---

1. "Theories of middle-range are the theories that lie between the minor but necessary working hypotheses evolved in abundance during day-to-day research and the all-inclusive systematic efforts to develop a unified theory that will explain all the observed uniformities of

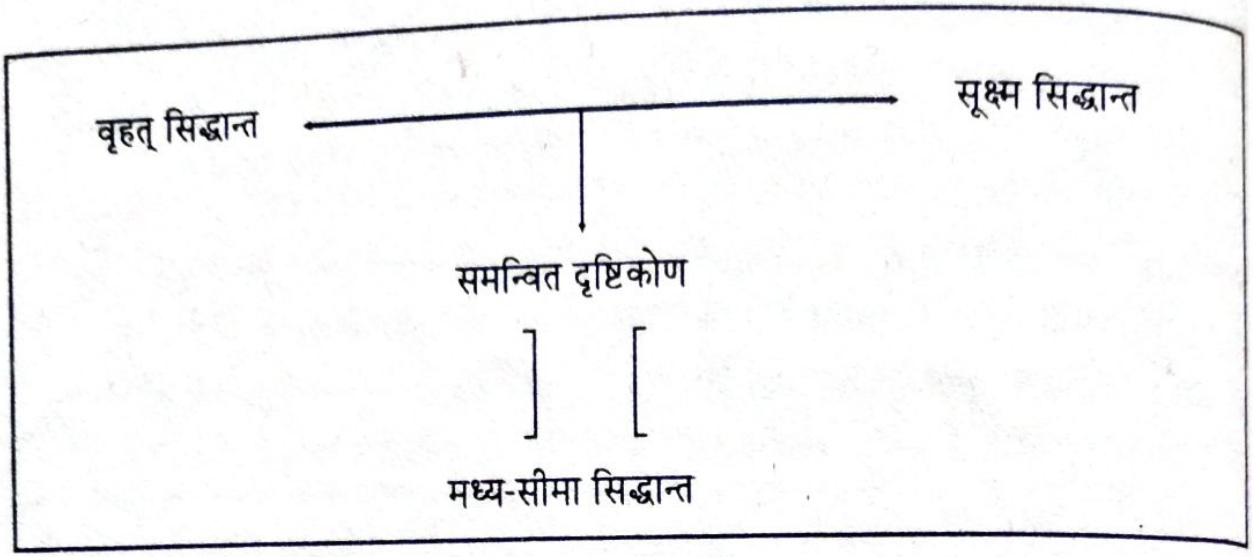

चित्र—2 : मध्य-सीमा सिद्धान्त

मध्य-सीमा सिद्धान्तों की प्रकृति को इनकी निम्नांकित विशेषताओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) मध्य-सीमा सिद्धान्त सूक्ष्म व वृहत् अध्ययनों के बीच की श्रेणी के अध्ययनों पर आधारित होते हैं तथा इसलिए इनका दृष्टिकोण समन्वित होता है।

(2) मध्य-सीमा सिद्धान्त समाजशास्त्र में अत्यन्त उपयोगी हैं क्योंकि सामाजिक विज्ञानों में वृहत् सिद्धान्तों का निर्माण करना कठिन है, जबकि सूक्ष्म सिद्धान्तों में सिद्धान्त के अनेक लक्षण पाए ही नहीं जाते।

(3) मध्य-सीमा सिद्धान्त सामाजिक घटनाओं के कुछ सीमित पहलुओं से ही सम्बन्धित होते हैं। उदाहरणार्थ—**मर्टन** का सन्दर्भ-समूह का सिद्धान्त इस श्रेणी के सिद्धान्तों का ही एक उदाहरण है।

(4) मध्य-सीमा सिद्धान्त अवलोकित तथ्यों के अधिक नजदीक होते हैं तथा इसलिए इनका प्रयोगसिद्ध (आनुभविक) परीक्षण किया जा सकता है।

(5) मध्य-सीमा सिद्धान्त अधिक विशिष्ट होते हैं तथा इनकी सन्दर्भ संरचना काफी सीमित होती है।

(6) मध्य-सीमा सिद्धान्तों का सम्बन्ध समाज की विशिष्ट व नियन्त्रणीय इकाइयों से होता है।

(7) मध्य-सीमा सिद्धान्त वृहत् सिद्धान्तों की तुलना में कम आडम्बरी होते हैं।

मर्टन के सन्दर्भ समूह एवं आदर्शविहीनता (अप्रतिमानता) के सिद्धान्त के अतिरिक्त, **होमन्स** (Homans) का प्रारम्भिक सामाजिक व्यवहार का सिद्धान्त, **पेरेटो** (Pareto) का सम्भ्रान्तजन के परिभ्रमण का सिद्धान्त इत्यादि मध्य-सीमा सिद्धान्तों के प्रमुख उदाहरण हैं।

आज अनेक समाजशास्त्रियों ने मध्य-सीमा सिद्धान्तों को अपना समर्थन प्रदान किया है तथा इन्हें समाजशास्त्र में उपयोगी बताया है। **हॉकिन्स** (Hawkins), **जैटरबर्ग** (Zetterberg), **सेल्जनिक** (Selznick), **गोल्डनर** (Goldner), **हिलेरी** (Hillery) इत्यादि विद्वानों ने इन सिद्धान्तों को सामाजिक विज्ञानों में अधिक यथार्थ एवं उपयोगी बताया है।

परन्तु अनेक विद्वान् (जैसे **रोबर्ट बीरस्टीड** आदि) मध्य-सीमा के सिद्धान्तों पर वृहत् समस्याओं के अध्ययनों से विद्वानों को दूर ले जाने तथा निम्न-स्तर की बौद्धिक महत्त्वाकांक्षाओं का परिचायक होने का आरोप लगाते हैं। साथ ही, कुछ लोग यह स्वीकार करते हैं कि इससे समाजशास्त्र में विखण्डन (Fragmentation) को प्रोत्साहन मिलेगा, परन्तु मर्टन ने इन आरोपों को निराधार बताया है। इनका

ता है कि मध्य-सीमा सिद्धान्त विशिष्ट एवं परिसीमित अनुसन्धान पर आधारित होते हैं। आज वृहत्
यन भी इसी प्रकार के अनुसन्धान पर आधारित हैं।

(स) परिकल्पनात्मक एवं